चीनी के दाम तीन साल में सबसे कम

एक्स-मिल कीमत उत्पादन लागत से 7 रुपये प्रति किलोग्राम नीचे आई

दिलीप कुमार झा
मुंबई, 17 दिसंबर

चीनी की कीमतें दिसंबर में 5 फीसदी घटकर तीन साल के सबसे निचले स्तर पर आ गई हैं। इसकी वजह यह है कि मिलों ने नकदी की आवक और किसानों को गन्ने के बकाये का भुगतान करने के लिए तेजी से बिकवाली की है। इस क्षेत्र की शीर्ष संस्था भारतीय चीनी मिल संघ (इस्मा) ने कहा है कि उत्तर प्रदेश में औसत एक्स-फैक्टरी कीमत गिरकर 2,480 रुपये प्रति क्विंटल पर आ गई है, जो नवंबर में 2,612 रुपये और अक्टूबर में 2,683 रुपये प्रति क्विंटल थी।

इसी तरह महाराष्ट्र में चीनी की औसत एक्स-मिल कीमत घटकर 2,750 रुपये प्रति क्विंटल पर आ गई है,जो नवंबर में 2,800 रुपये और अक्टूबर में 2,964 रुपये प्रति क्विंटल थी। चीनी की वर्तमान एक्स-फैक्टरी कीमत अक्टूबर 2011 के बाद सबसे कम है। हाजिर वाशी मंडी में एम30 किस्म का भाव 10 महीने के निचले स्तर 2,916 रुपये प्रति क्विंटल पर आ गया है। इससे पहले इस स्तर पर चीनी इस साल मार्च में थी।

इस्मा के महानिदेशक अविनाश वर्मा ने कहा, 'चीनी की कीमतों में रोजाना लगभग 10 से 40 रुपये प्रति क्विंटल तक की गिरावट आ रही है। वर्तमान कीमत चीनी उत्पादन की लागत से करीब 500 से 700 रुपये प्रति क्विंटल कम है। इसलिए मिलों को 9.5 फीसदी चीनी रिकवरी पर आधारित उचित एवं लाभकारी मूल्य (एफआरपी) 220 रुपये प्रति क्विंटल देने में भी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।'

यूपी में चीनी की औसत एक्स फैक्टरी कीमत गिरकर 2,480 रुपये प्रति क्विंटल पर आई, जो नवंबर में 2,612 रुपये थी

वहीं, देश में चीनी का भारी स्टॉक है। चालू पेराई सीजन में पिछले साल का बचा हुआ स्टॉक 75 लाख टन रहने का अनुमान है। लेकिन चालू सीजन के चीनी उत्पादन ने आपूर्ति की स्थिति और बदतर कर दी है। इस्मा ने अनुमान जताया है कि देरी से पेराई शुरू होने के बावजूद इस सीजन (अक्टूबर 2014 से सितंबर 2015) में अब तक चीनी का उत्पादन करीब 50 फीसदी बढ़ा है। अनुमानों के मुताबिक इस सीजन में 15 दिसंबर तक चीनी का कुल उत्पादन 42.3 लाख टन रहा है, जो पिछले साल की इसी अवधि में 29 लाख टन था। इस साल चालू चीनी मिलों की तादाद में भी तेजी से बढ़ोतरी हुई है। पिछले साल 15 दिसंबर तक 426 चीनी मिलें चालू थीं, जबकि इस साल 442 मिलें पेराई कर रही हैं।

हालांकि एक पखवाड़े पहले केवल 344 चीनी मिलें गन्ने की पेराई कर रही थीं। दो साल पहले 15 दिसंबर तक 49.1 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था, जिससे सीजन 2012-13 में कुल उत्पादन बढ़कर 251.4 लाख टन रहा था। इस्मा ने इस साल भी इतना ही उत्पादन रहने का अनुमान जताया है। उद्योग को इस बात की चिंता है कि इस चीनी की वर्तमान कीमतों पर किसानों का बकाया बढ़ने लगेगा। चीनी की एक्स-मिल कीमतें पिछले साल से कम हैं, लेकिन गन्ने की कीमतें ज्यादा हैं। इसलिए अगर चीनी की कीमतों में सुधार नहीं हुआ तो बकाया पिछले साल से ज्यादा हो सकता है। गौरतलब है कि पिछले सीजन में मार्च 2014 तक गन्ने का बकाया 12,500 करोड़ रुपये का स्तर पार कर गया था।

उत्तर प्रदेश शुगर मिल्स एसोसिएशन के सचिव दीपक गुप्ता ने कहा, 'चीनी की उत्पादन लागत 32.50 रुपये प्रति किलोग्राम आ रही हैं, इसलिए चीनी मिलों को प्रत्येक एक किलोग्राम चीनी पर करीब 7 रुपये का नुकसान हो रहा है। सरकार ने गन्ना किसानों को 240 रुपये प्रति क्विंटल का अग्रिम भुगतान करना अनिवार्य कर दिया है, इसलिए मिलों के पास किसी भी कीमत पर चीनी बेचने के अलावा और कोई चारा नहीं है।'

Business Standard

18/12/14